Look N Learn
Children's Jain
Magazine
25th April 2016 | Every Fortnight | English, Hindi & Gujarati

Rs. 5.00/-

સમવસરણ

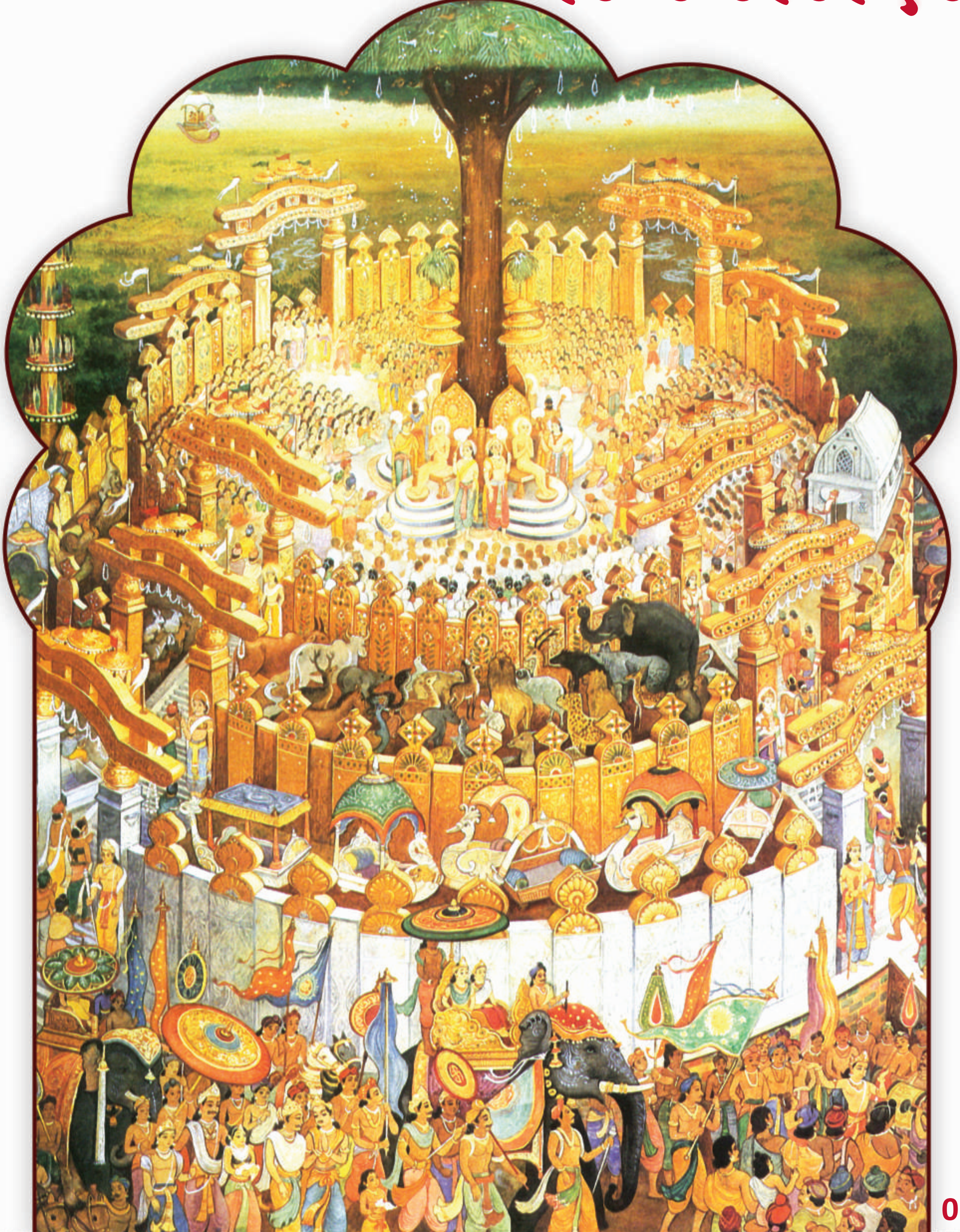

Year - 9, Vol: 7, Issue: 06, Date: 25.04.2016
Editor: Ashokbhai Sheth 20, Vanik Niwas, 1st floor, Cama Lane, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

एक ऐसी जगह...

- जहाँ दुनिया के सभी अजूबे एक साथ देखने को मिले...
- जहाँ आने के बाद, जाने का मन ना हो...
- जहाँ मनुष्य भी हो, देवता भी हो और पशु-पक्षी भी हो...
- जहाँ पशु-पक्षी अपना आपसी बैर भूल जाए...
- एक ऐसी दिव्य जगह जहाँ पॉज़िटिव वाइब्रेशन्स की अनुभूति हो...
- एक ऐसी जगह जहाँ परमात्मा की पवित्र वाणी सुनने मिले...

समवसरण यानी जहाँ सबको शरण मिले...

A place...

- Where one witnesses all the wonders of the world.
- From where one does not feel like leaving.
- Where animals, humans and celestial beings co-exist.
- Where any living being does not have any animosity for each other.
- Which is divine and one always experiences positive vibrations.
- Where one is blessed with the pious words of Parmatma.

Yes... Right... It is Samavasaran!

Moral: 1) We will keep the atmosphere of our home calm and peaceful like the Divine Samavasaran.

2) All are my friends, I have no enemies.

समवसरण क्यों बनाते है?
Why is the Samavasaran made?

★ स्वर्ग के देवो को परमात्मा के प्रति अत्यंत भक्ति-भाव है।

★ वे अपने हृदय के भावों को परमात्मा के चरणों में रखने की इच्छा करते है।

★ परमात्मा जिस जगह बैठने वाले हैं वह जगह जगत में कहीं नहीं हो वैसी होनी चाहिए।

★ धर्म का प्रभाव बढ़े।

★ जिसके पास अल्पज्ञान है वह इस प्रकार के आकर्षण से आकर्षित होकर आते है और वहाँ आने के बाद सच्चे ज्ञान से भर जाते है।

★ सभी जीव परमात्मा के दर्शन करने के लिए आए और उन्हें धर्म का ज्ञान प्राप्त हो।

★ It is an expression of devotion by the celestial beings towards their beloved Parmatma.

★ They desire to offer their heartfelt gratitude at the lotus feet of Parmatma.

★ It is an effort to build a unique, incomparable and one of its kind as Parmatma shall prevail there and give discourses for the benefit of all the living beings.

★ It attracts many towards worship so that they tread on the divine path and seek Parmatma's blessings.

Moral: Just like the celestial beings, we too have the potential to spread the divine words of Parmatma!

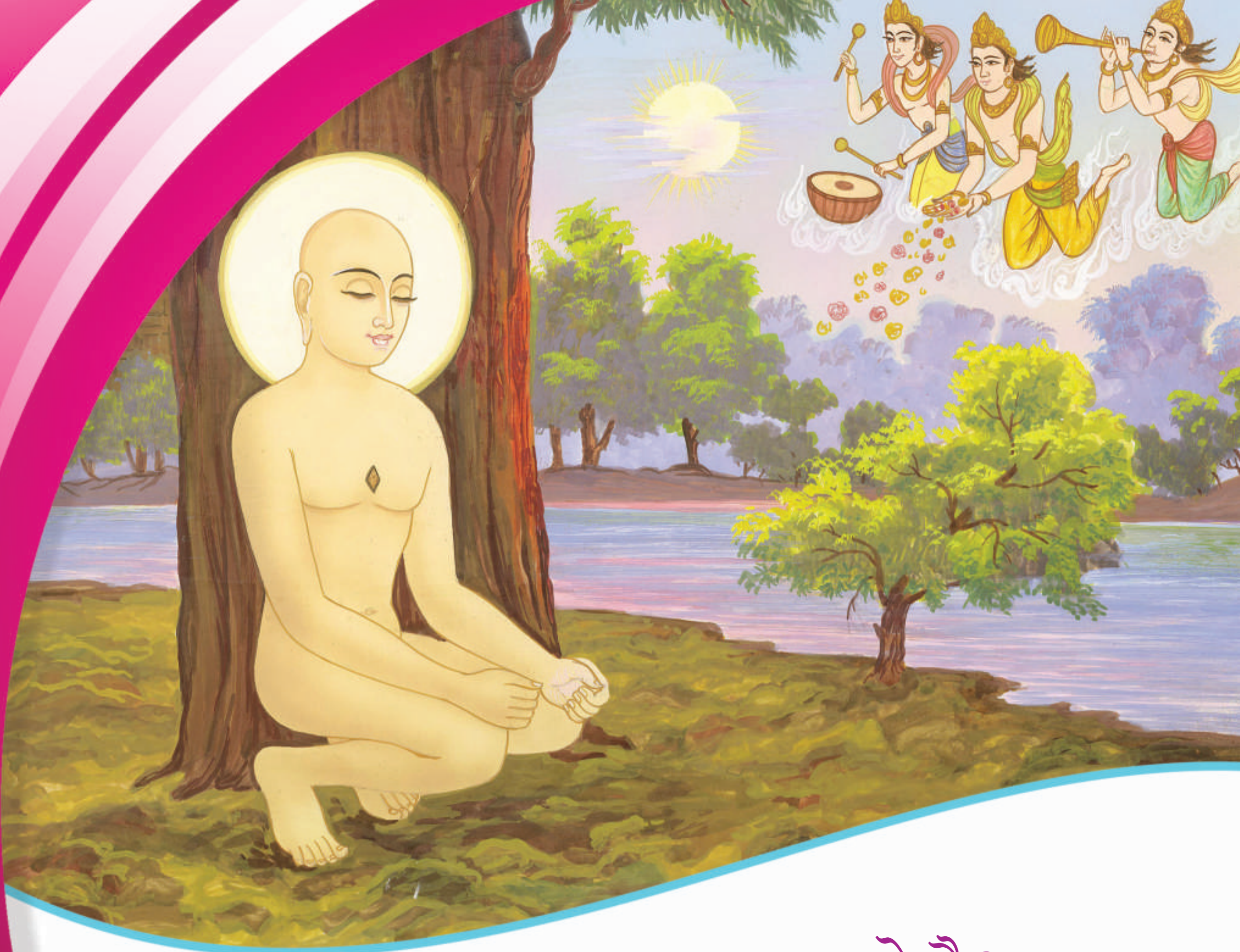

समवसरण कब बनाते है?

When is the Samavasaran made?

जब परमात्मा को केवलज्ञान होता है तब देवलोक के देव ४८ मिनिट से भी कम समय में समवसरण की रचना करते है।

When Tirthankar attains omniscience, the celestial beings create the majestic Samavasaran in less than 48 minutes.

Moral

No matter how busy I am, I will always give my selfless devotion towards my Parmatma.

परमात्मा को केवलज्ञान हुआ इसकी जानकारी देवो को कैसे होती है?

- देवताओं के राजा इन्द्र का सिंहासन कंपायमान होता है।
- इन्द्र अवधिज्ञान से जानते है की परमात्मा को केवलज्ञान प्रगट हुआ है।
- परमात्मा के पॉज़िटिव वाइब्रेशन्स विश्व में फैलते है।

How does one know that Parmatma has attained Omniscience?

- When the majestic Throne of Lord Indra, (the King of celestial beings) begins to shake.
- Lord Indra then becomes aware of the fact that Parmatma has attained Omniscience through his knowledge i.e., (Avadhignan).
- Parmatma's positive vibrations spread in the entire Universe.

Moral ➤

1) I will use my strength, talent and possessions positively without showing them off.

2) I will use my ability and talent with humility without boosting my ego.

परमात्मा को केवलज्ञान होता है तब क्या होता है?

What are the consequences of Parmatma's omniscience?

पूर्ण लोक में
प्रकाश होता है।

The entire universe is illuminated for few seconds.

नरक के जीवों को
१ सेकेंड के लिए सुख
की अनुभुति होती है।

The hellish beings, who otherwise live in complete torture, experience happiness for that 1 second.

जगत के प्रत्येक जीवों
को सुख और शांति
की अनुभुति होती है।

Every single living being experiences peace and joy.

MORAL

- I will consciously try to spread happiness through my words, thoughts and actions.
- I will never hurt anyone.
- I will never be negative.

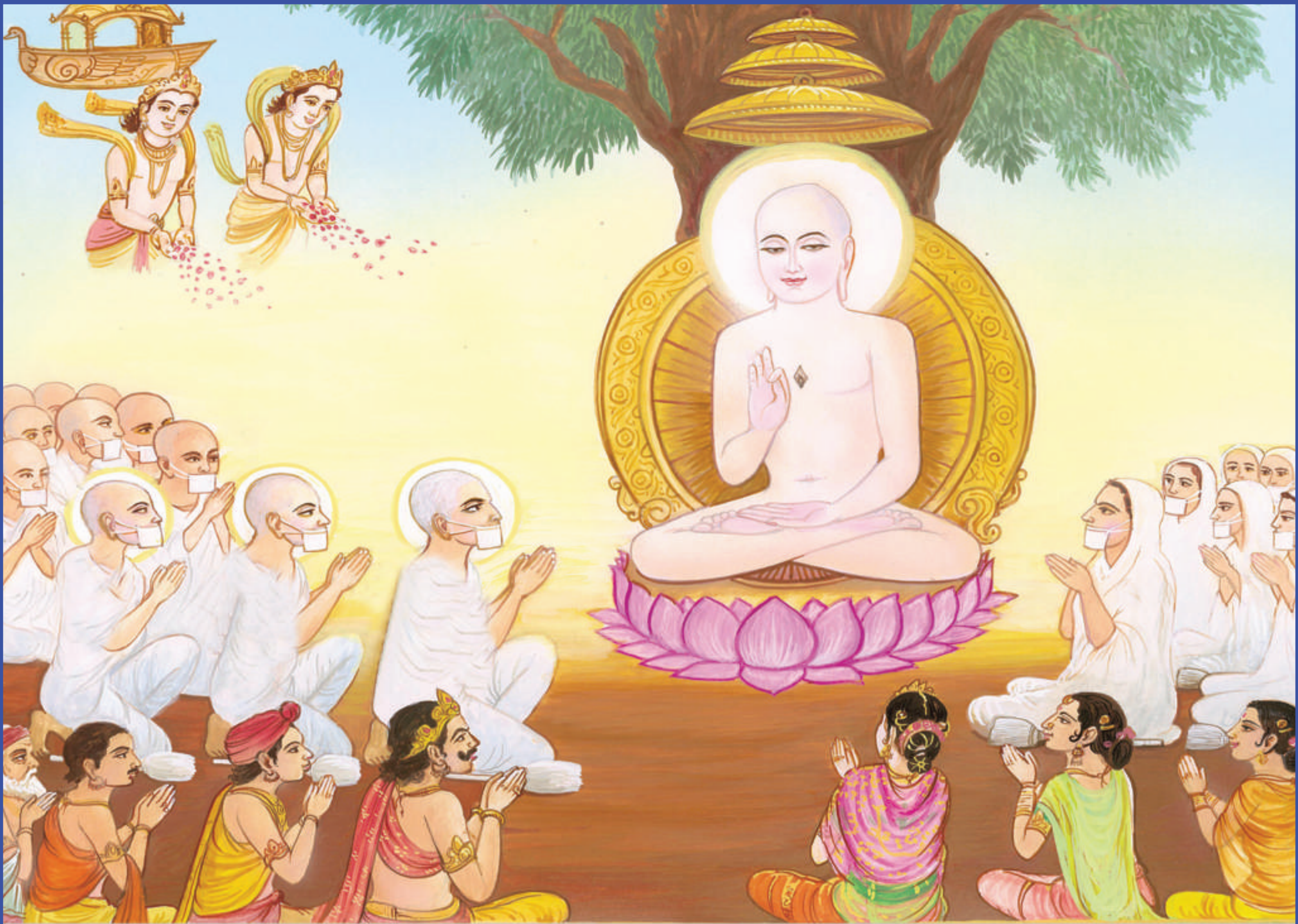

समवसरण कहाँ बनाते है?

Where is the Samavasaran made?

जिस गाँव में परमात्मा बिराजमान होते हैं, उस गाँव के पूर्वोत्तर दिशा में समवसरण की रचना की जाती है क्योंकि पूर्वोत्तर दिशा से पॉज़िटिव एनर्जी का बहाव होता है।

Samavasaran is created in the North-East Direction of the town where Parmatma resides because it has the maximum flow of positive energy.

We must sit to study in the North-East direction.

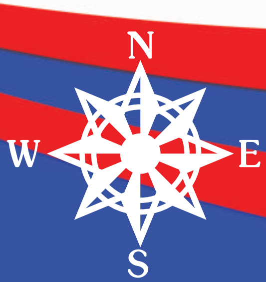

समवसरण कौन बनाता है?
Who are involved in the making of Samavasaran?

समवसरण देवलोक के देवता बनाते है।

Samavasaran is created by the celestial beings of Devlok

इन्द्र की आज्ञा से अनेक देव मिलकर समवसरण का निर्माण करते है

With the consent of Indra, the celestial beings create Samavasaran

↓

वायुकुमार देव (Vayukumar Dev)

१२ कि.मी का विस्तार साफ करते है

(Cleans an area of about 12kms)

↓

मेघकुमार देव (Meghkumar Dev)

सुगंधी वर्षा करवाते है

(Showers fragrant achet [non-living] water)

↓

देवीयाँ अचेत फुलो की वृष्टि करती है

(The Devi showers non-living flowers)

↓

अन्य देव तीन गढ का निर्माण करते है

(Other celestial beings build the majestic 3 floors of Samavasaran)

Moral: Team Work leads to Success. When there is unity there is always Victory and Success. We must work together for victory.

LOOK n LEARN

RIGHT FAITH

Birds have wings that help them to fly at great heights...

Trees have roots that help them to survive and stay strong...

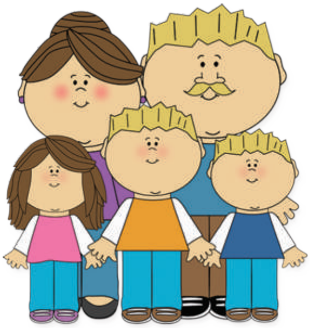

Similarly, human beings have right knowledge that helps them to break the cycle of birth and rebirth and attain Moksh...

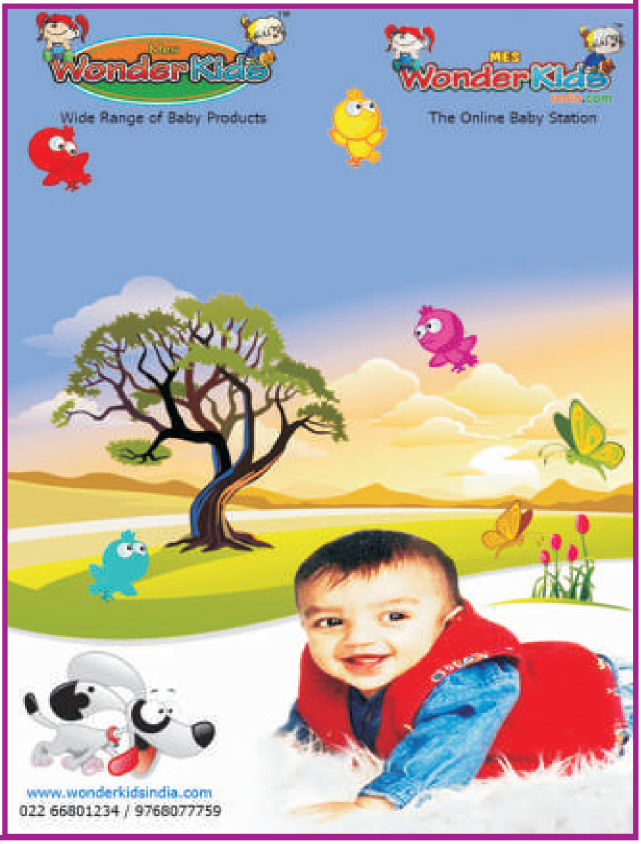

Ayushmaan Bhava

A Blessing For A Lifetime Of Good Health Is Born With Your Baby

Preserve Your Baby's Umbilical Cord Stem Cells At Birth

Now At Just ₹9990*

LifeCell™

Call 1800 419 5555 | SMS 'LIFECELL' TO 53456 | www.lifecell.in

*Terms & Conditions Apply

समवसरण की रचना कैसी होती है?

How is the Samavasaran made?

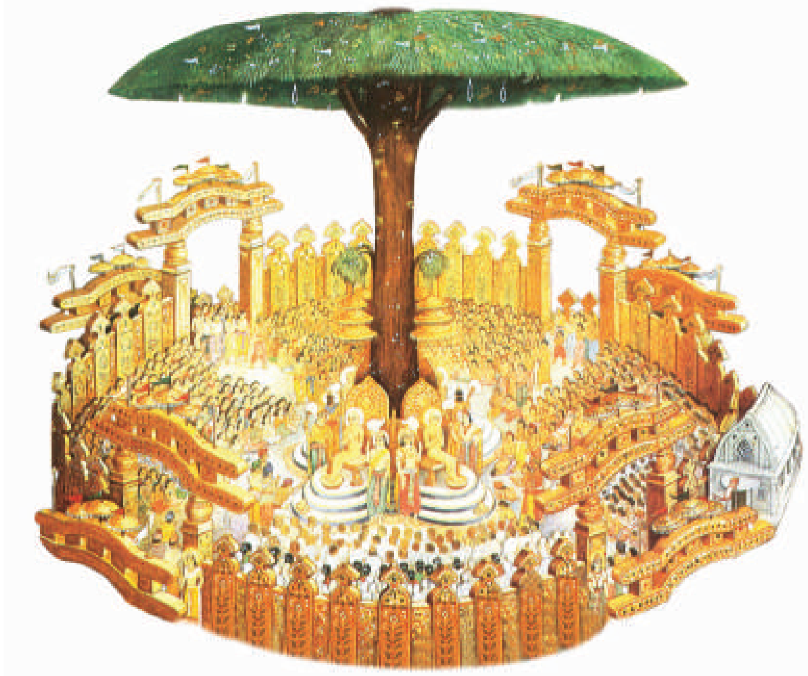

समवसरण में तीन गढ होते है। यहाँ बीच में अशोक वृक्ष के नीचे भगवान का चौमुखी सिंहासन होता है। भगवान पूर्व दिशा में मुख करके बैठते है।

It has three floors. Admist them is the divine four faced throne of Parmatma. Parmatma faces the East.

तीसरा गढ रत्नों से बना होता है। यह गढ देवी-देवता, (मनुष्यो) श्रावक-श्राविका, साधु-साध्वी, गणधरो, ज्ञानी, केवलज्ञानी, आत्माओं के लिए बनाया जाता है।

The third topmost floor is made up of invaluable precious stones. This is made for the celestial beings, ascetics, Omniscients.

दूसरा गढ सोने का होता है। यह पशु-पक्षीयों के लिए है। यहां सभी पशु-पक्षी आपस में अपना बैर भूलकर परमात्मा की देशना सुनने उपस्थित होते है।

The second floor is made up of solid gold. All the birds and animals sit besides each other without any feelings of discomfort or animosity for hearing Parmatma's discourse.

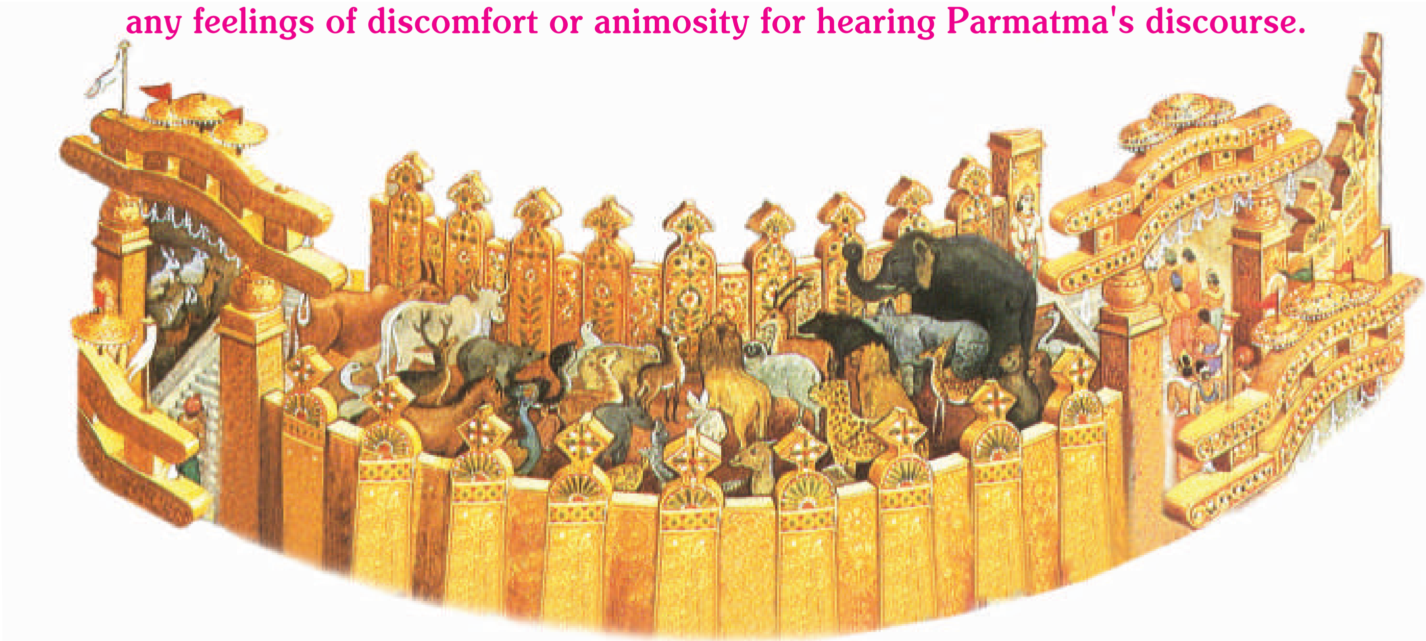

पहला गढ चांदी का होता है। यह पार्किंग झोन है। यहाँ देवी देवता के विमान एवं राजा रानी की पालखी या उनकी सवारी यानी हाथी-घोडों के रथ इत्यादि को ठहरने के लिए जगह बनाई जाती है।

The first floor is made up of pure silver. It is the parking place for the vehicles in which the celestial beings, kings and queens have travelled.

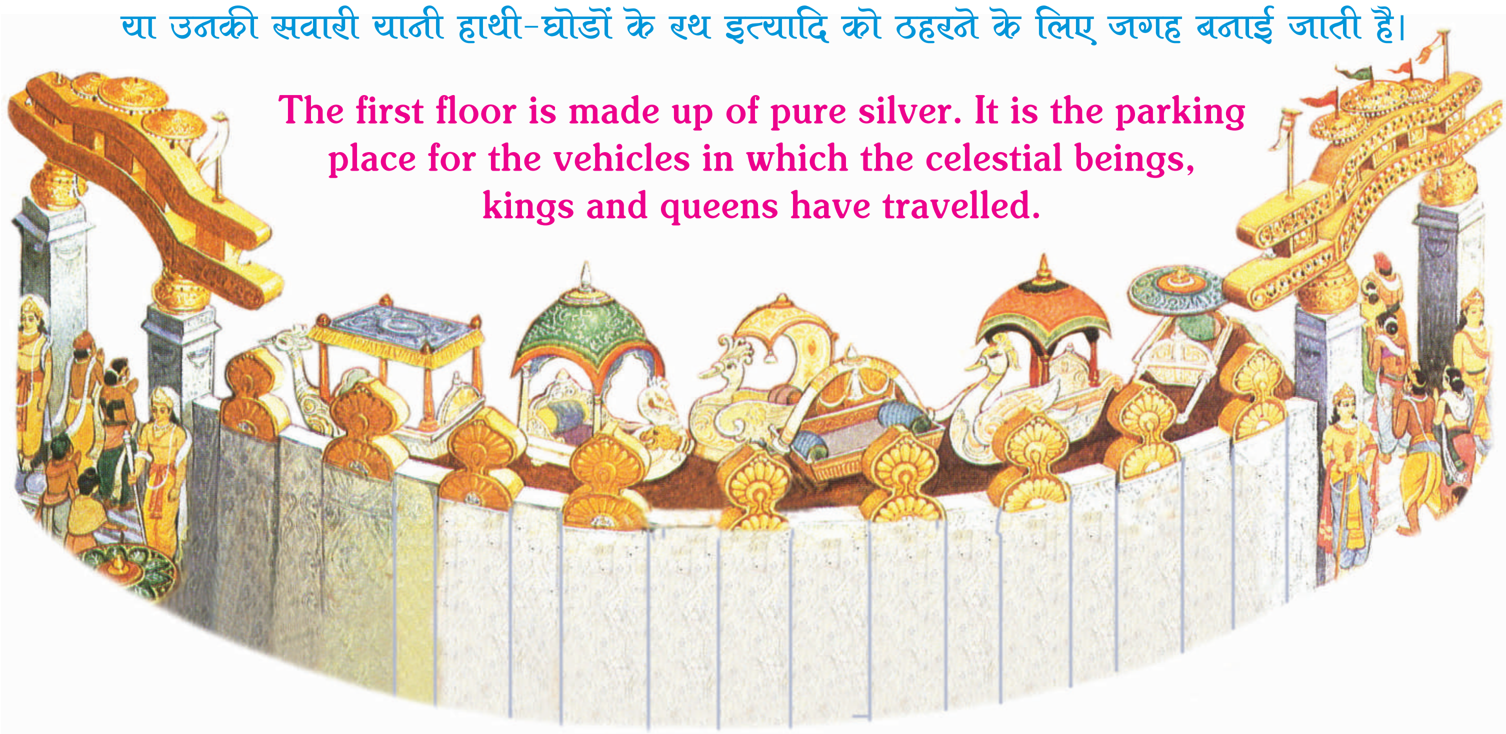

Moral : Around me, I shall create an environment of peace and harmony. I am unable to go to Samavasaran in the 5th Era but will surely worship the Sadhu-Sadhvijis in the Upashrays.

LOOK n LEARN

परमात्मा का आगमन!
Entry of Divine!

परमात्मा समवसरण में "नमो तित्थस्स" कहेकर सिंहासन पर पूर्व दिशा में मुख करके तीसरे गढ में बिराजते है।

Parmatma resides on 3rd Floor in the Samavasaran facing the east direction and says "Namo Tithhassa".

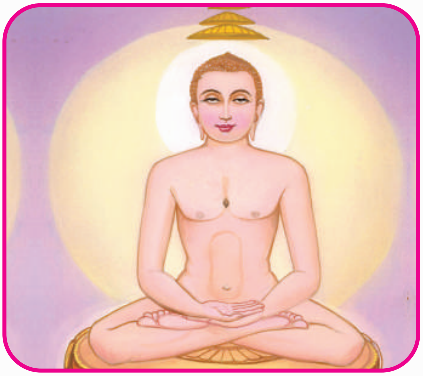

देशना देने के बाद परमात्मा दूसरे गढ में, व्यंतर देव के द्वारा बनाए गए देवच्छंदक कक्ष में आराम करते है।

After Parmatma's discourse, He rests in an area made by Vyantar celestial beings on the 2nd floor.

देव परमात्मा के शेष ३ दिशाओं में परमात्मा जैसी ही ३ प्रतिकृतियाँ स्थापित करते है जिससे परमात्मा चारों दिशाओं में दिखाई देते है।

The other 3 directions in Samavasaran has a look alike of Parmatma so that everyone can see Him!

Moral: Before starting anything new always seek blessings from your elders.

परमात्मा की देशना!

Parmatma's Discourses!

परमात्मा अर्धमागधी भाषा में देशना देते है।

His words flow in the Ardhmagdhi language.

सभी जीवों को परमात्मा की देशना अपनी अपनी भाषा में सुनाई देती है।

Every creature present in the Samavasaran understands in his own language.

परमात्मा की देशना गणधर सुनते है और आगमो की रचना होती है।

The Gandhars create Aagams from the discourses of Parmatma.

कुछ मनुष्य दीक्षा लेते है और कुछ श्रावक १२ नियमों के पच्चक्खान लेते है।

Few of them accept vows of an ascetic whereas many of them accept 12 vows of a Shravak.

देवी-देवताओ को धर्म के प्रति श्रद्धा दृढ़ बनती है और पशु-पक्षी श्रावक धर्म अंगीकार करते है।

Faith in religion is strengthened in humans, celestial beings and animals.

Moral: For effective communication, I must listen well and not form judgements and opinions.

परमात्मा की वितरागता

बच्चों जब आप थोडी देर के लिए भी कोई Amusement Park, Disney World or Mall में जाते है तो कितने खुश होते है। कितना आकर्षण अनुभव करते है?

तो फिर समवसरण तो पूरा भगवान के लिए बनाया जाता है तो क्या भगवान इस भव्यता से आकर्षित होते है? क्या भगवान इस समवसरण से आकर्षित होते है? क्या भगवान ऐसे अदभुत सोने, चांदी और रत्नों से बने समवसरण पर गर्व करते है?

No, कभी नहीं।

परमात्मा केवल हम अबोध जीवों के लिए करूणा बरसाते है। हमे सत्य समझाते है।

Parmatma remains untouched

Kids, we are in complete awe when we visit an amusement park, a Disney World or a well-designed Mall. We are so excited and attracted towards it.

Wouldn't the glamour and glitz affect Parmatma?

Doesn't He feel proud about it?

Then wouldn't Parmatma be attracted towards the Samavasaran made up of Gold and precious stone and that too especially for Him?

The magnificient, á la grande Samavasarn is made only to attract the ignorant towards religion.

Amazing Fact

बच्चों जब आप departmental store या Mall में जाते हो तो वहाँ पर आप को कितनी चीजें देखने मिलती है, वैसे ही देवलोक में भी एक ऐसी ही अद्भुत दुकान है जिसे **"कुत्रिकापन"** कहते है।

कुत्रिकापन में ३ लोक की सभी चीजें मौजूद होती है। आप जो मांगो वो मिलता है। यदि समवसरण में परमात्मा की देशना सुनकर हजार लोग दीक्षा लेने के लिए तैयार होते है तो एक ही सेकंड में दीक्षा के लिए १००० रजोहरण, १००० पात्रा इत्यादि तुरंत हाज़िर हो जाते है।

In devlok there is a splendid shop which is known as "Kutrikapan". It has everything that is present in the entire universe. Ask for it and you shall get it!

For Eg: If in Samavasaran 1000 people desire to take Diksha together, all that they need for Diksha i.e., 1000 Rajoharan, 1000 Patra, etc will be made available in no time from this shop - 'Krutikapan'.

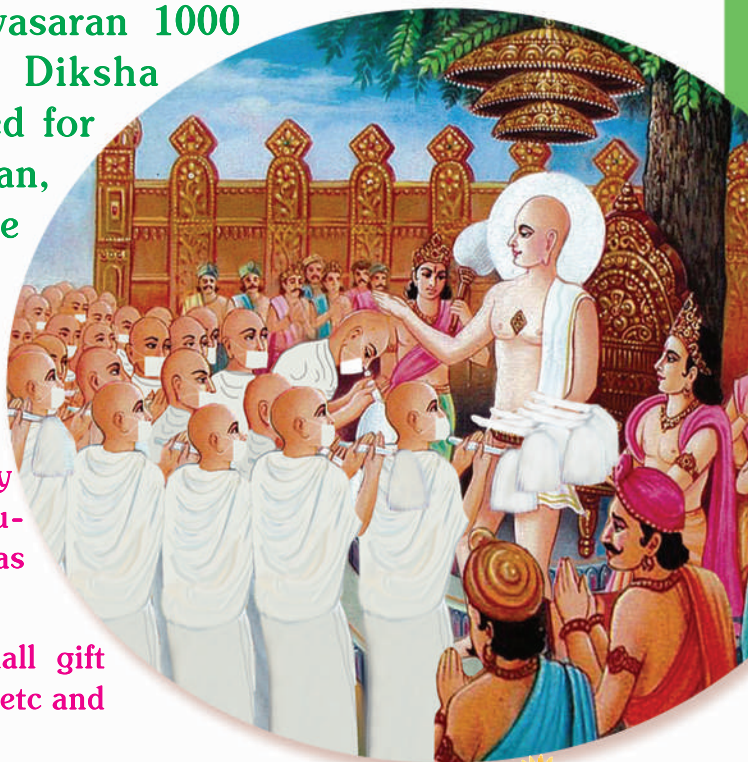

Moral

- I will try to offer Seva by fulfilling the needs of Sadhu-Sadhviji and Shravak-Shravika as much as I can.
- When I gift somebody, I shall gift religious articles like books, CDs etc and do Shashan Prabhavna.

अष्ट प्रतिहार्य

सभी देव इन्द्र की आज्ञासे प्रभुकी सेवामें रहते है। आम लोगो को प्रभु के पास लेकर आये उसे प्रतिहार कहते है। जिससे लोगो का आकर्षण बढता है और वह जगत के स्वामी के पास पहोचते है इसलिये वह प्रतिहार्य कहलाते है। देवो भगवान के प्रति भक्ति दिखाने के लिए अशोक वृक्ष जैसे अन्य ८ प्रतिहार्य रचते है।

१) अशोक वृक्ष

शीतल छाया देते है, इतनी ठंडक पहुँचाते है जैसे A.C. में बैठे हो वैसा लगता है। अशोक वृक्ष १२ गुना लंबा होता है।

२) पुष्पवृष्टि

एक योजन के दायरे में अचेत पुष्प की वृष्टि अधिष्ठायिका देवीयाँ करती है। फुल की पंखुडियाँ उपर दराज नीचे इस तरह से पुष्प बिछाये जाते है। फुल गलीचा का काम करते है।

३) दिव्य ध्वनी

प्रभु की देशना मालकोंश राग में होती है विणा आदि जैसे कर्ण प्रिय संगीत भी साथ होते है।

LOOK n LEARN

४) चामर

परमात्मा की दोनो ओर देवता चामर झुलाते है।
जिससे हवा आती है और परमात्मा की भक्ति होती है।

५) सिंहासन

परमात्मा जिसके उपर बिराजमान होते है उसे सिंहासन कहते है। वह सिंहासन स्फटीक का बना हुआ होता है।

६) भामंडल

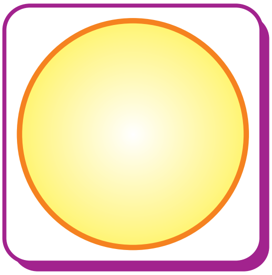

परमात्मा के मस्तक के पिछे के भाग में एक दिव्य आभायुक्त प्रकाशमय, तेजोमय, आभा मंडल होता है, जो बारह सूर्य के तेज से भी अधिक तेजस्वी होता है वह अंधकार में दस दिशाओं को प्रकाशित करता है।

७) देव दुदुंभि

भुवन व्यापी दुदुंभि... यह देवोका वाजिंत्र है। प्रभु की किर्ती और यश फैलाता है और नाद (आवाज) करके घोषणा करता है की यहाँ त्रिलोक के नाथ बिराजमान है।
धर्म नरेश्वर पधारे हुए है।

८) छत्र

प्रभु के मस्तक के उपर तीन छत्र होते है। पहेला छत्र छोटा होता है, दुसरा थोडा बड़ा होता है, और तीसरा छत्र सबसे बड़ा होता है। परमात्मा का विषेश प्रभाव...
तीनो लोक के लिए आप छत्र के समान हो!

Count the number of times the words 'Ashok Vruksh', 'Pushpa Vrushti', 'Divya Dhwani', 'Chamar', 'Sinhasan', 'Bhamandal', 'Dev Dudumbhi' and 'Chatra' appear below...

Pushpa Vrushti
Chamar
Sinhasan
BHAMANDAL
Divya Dhwani
Chamar
ASHOK VRUKSH
Sinhasan
Chatra
Pushpa Vrushti Bhamandal
Divya Dhwani CHAMAR
PUSHPA VRUSHTI
Dev Dudumbhi
Bhamandal Sinhasan
Divya Dhwani Chatra
Ashok Vruksh
Pushpa Vrushti
CHAMAR
Divya Dhwani
Sinhasan
Chamar
Bhamandal Ashok Vruksh Bhamandal
Ashok Vruksh
Divya Dhwani
Chatra
Chamar
Bhamandal
Pushpa Vrushti
Sinhasan
Chatra
Sinhasan
Dev Dudumbhi
Dev Dudumbhi ASHOK VRUKSH Chatra
PUSHPA VRUSHTI Dev Dudumbhi
Divya Dhwani Bhamandal
Dev Dudumbhi
Sinhasan
Pushpa Vrushti
Sinhasan
Chatra
Ashok Vruksh
Bhamandal
Chamar
Divya Dhwani
Dev Dudumbhi
Pushpa Vrushti
DEV DUDUMBHI Sinhasan Chamar
Pushpa Vrushti Divya Dhwani
Ashok Vruksh DEV DUDUMBHI Bhamandal Sinhasan

Ashok Vruksh	- ________	Sinhasan	- ________
Pushpa Vrushti	- ________	Bhamandal	- ________
Divya Dhwani	- ________	Dev Dudumbhi	- ________
Chamar	- ________	Chatra	- ________

- Gurubhakt Mehta Parivar

Build Your Vocabulary!!!

Dictionary

The Happening 'H'

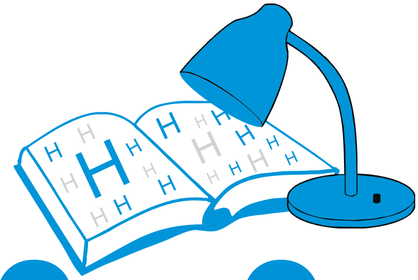

H - Help
Serve the needy

H - Harangameshi Dev
Name of a Dev

H - Hariyakkamane
I will not walk on green grass

H - Hellish Beings
Jeev of Narak

Find out and make a list of more divine words starting with letter “H”

Honesty

- Nysha Doshi

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol. : 7, Issue : 06, Date : 25.04.2016, Postal Registration No. MNE/171/2015-17.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

Show what feelings do you have towards God right now?

Too much happy to think about God

Too much clever to think about God

Too young to think about God

Too late to think about God

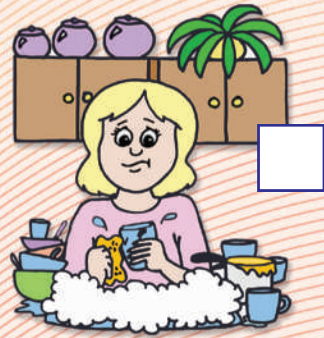

Too much busy to think about God

Too self sufficient to think about God

Too much devoted to think about God in each and every task I do

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth